जन वाचन आंदोलन

बाल पुस्तकमाला

“ किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज है
किताबों में साइंस की आवाज है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है
क्या तुम इस संसार में नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ”

–सफ़दर हाश्मी

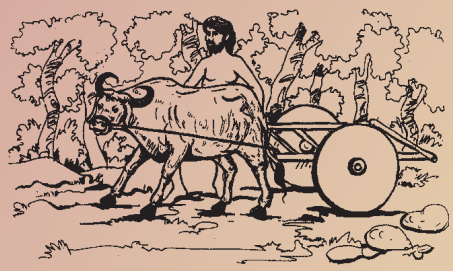

डॉ. खत्री को बहुत कम लोग जानते हैं। वो आज़ादी से पहले इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी पढ़ाते थे और हिंदी में कविता लिखते थे। इस पुस्तक को आज़ादी के दौर में लीडर प्रेस ने छापा था। इसमें यातायात का इतिहास, बहुत ही सुगम और सरल छंदों में दिया गया है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपए　　**B - 9**　　Price: 10 Rupees

इक्का! तांगा! मोटर!

डॉ. एस. पी. खत्री

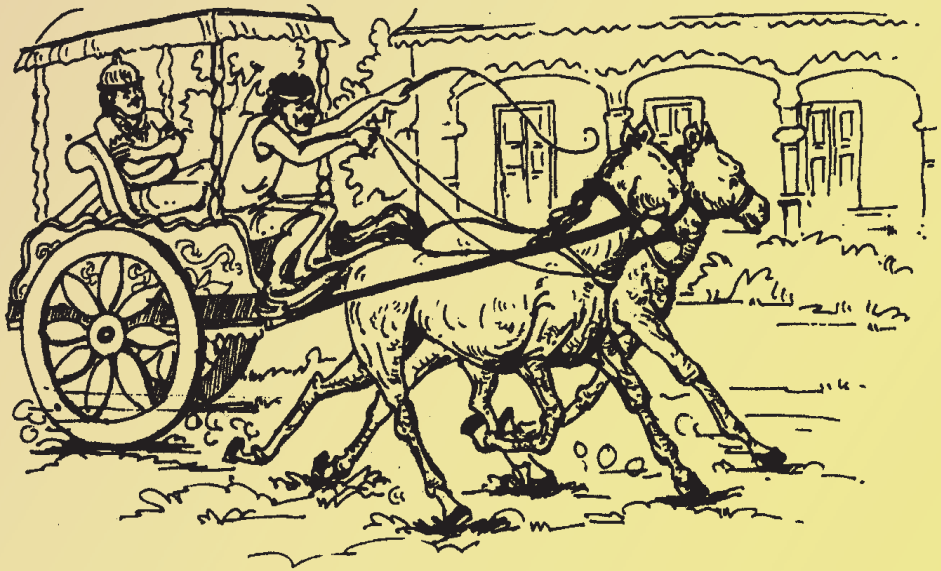

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

इक्का! तांगा! मोटर!: डॉ. एस.पी. खत्री
Ekka Tanga Motor : Dr. S.P. Khatri

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित,
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : मनोज पंडित
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2000,
2002, 2003, 2006

मूल्य: 10 रुपए

Bharat Gyan Vigyan Samithi
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

इक्का! तांगा! मोटर!

डॉ. एस.पी. खत्री

इक्का!
तांगा!
मोटर!

आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुंदर एक कहानी।
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।

जंगल और पहाड़ों पर ही,
पुरखे बसे हमारे,
करते थे शिकार मन माना,
थे बिलकुल बंजारे।

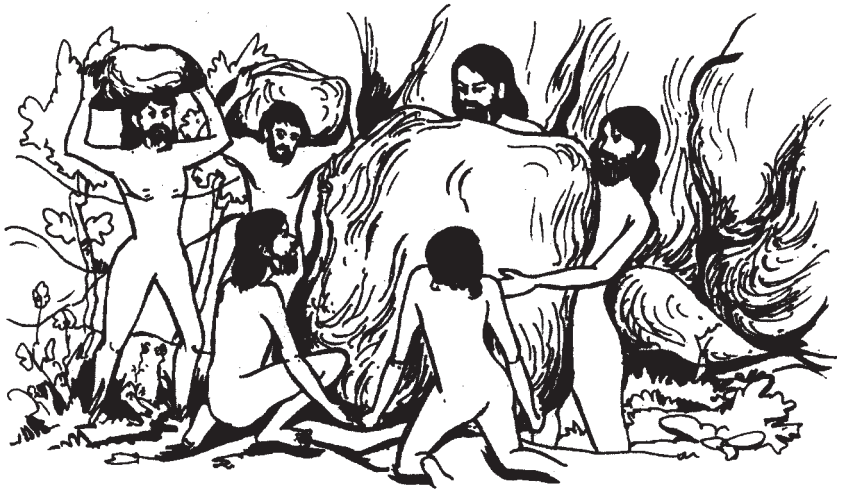

पत्थर ऊपर–नीचे रखकर,
छोटी गुफा बनाते,
बहुत बड़े पत्थर को लेकर,
फाटक एक लगाते।

शेर, बबर थे घूमा करते,
इससे डर था भारी,
जहां शाम होने लगती थी,
सो जाते नर–नारी।

घूमा करते थे शिकार की,
टोह लगाते फिरते।
मछली, हिरन, अनेक जानवर
के बल पर वे जीते।

रहने को घर–द्वार नहीं था,
कहीं न कपड़े–लत्ते।
गोल बांध सब रहते सहते,
ज्यों मक्खी के छत्ते।

बुद्धि हमारे पुरखों में,
जब धीरे–धीरे आई।
लगे सोचने और समझने,
सब मिल भाई–भाई।

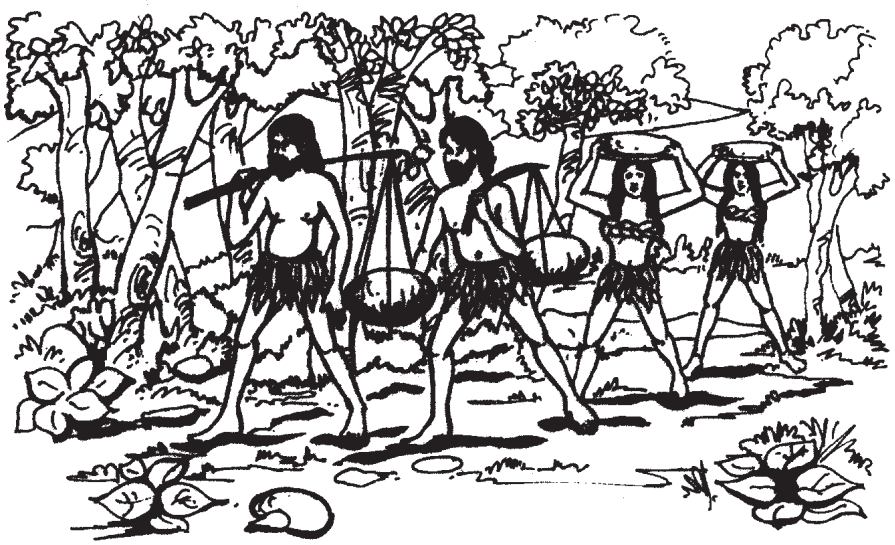

दूर–दूर से पत्थर लाना,
दूर–दूर से खाना।
दूर–दूर का आना–जाना,
सब का था मन माना।

कैसे जायें? क्या–क्या लायें?
होती थी कठिनाई,
इतने में ही किसी एक ने,
सूझ नई बतलाई।

दो गोले पत्थर ले आया,
जाकर वही अकेला।
ऊपर से दो बांसों को रख,
बना लिया एक ठेला।

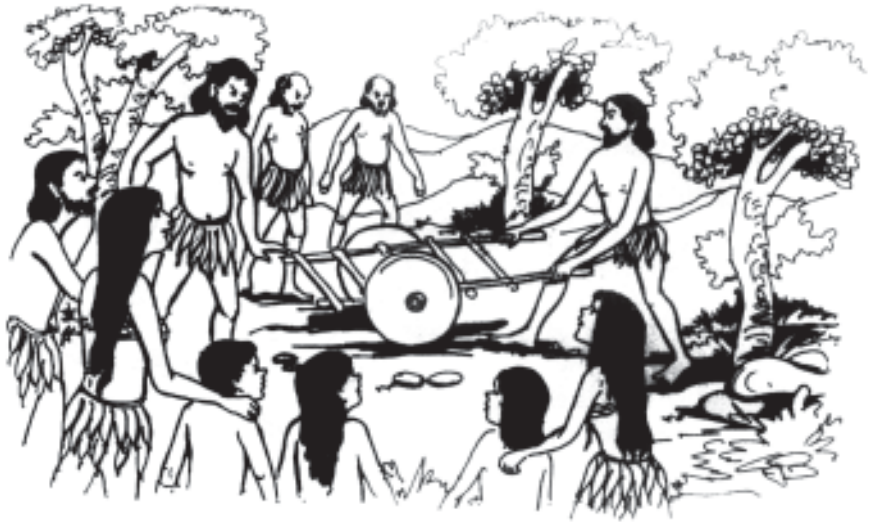

घरघर–चरमर, चरमर–घरघर,
चलता था वह ठेला।
उसे देखने को उस दिन तो,
उमड़ पड़ा एक मेला।

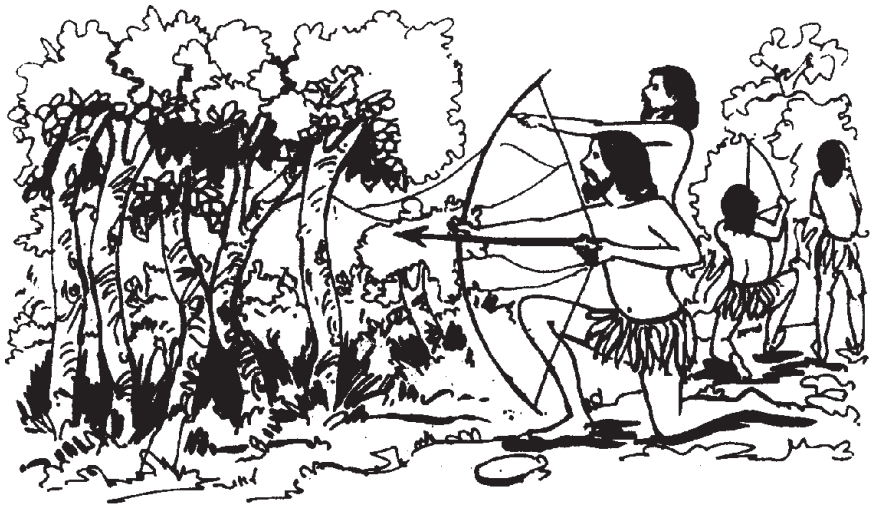

निकल पड़े कुछ लोग एक दिन,
करने चले शिकार।
मिल जायें कुछ भैंसे, घोड़े,
हिरन, ऊंट, लें मार।

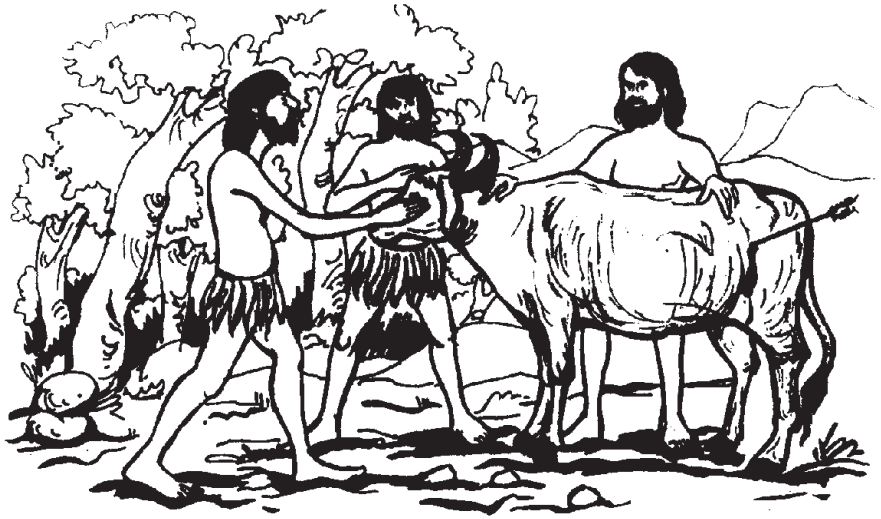

हाथ लगा उस दिन एक भैंसा,
उसको लाए घेर।
घायल था वह थोड़ा–थोड़ा,
चलते करता देर।

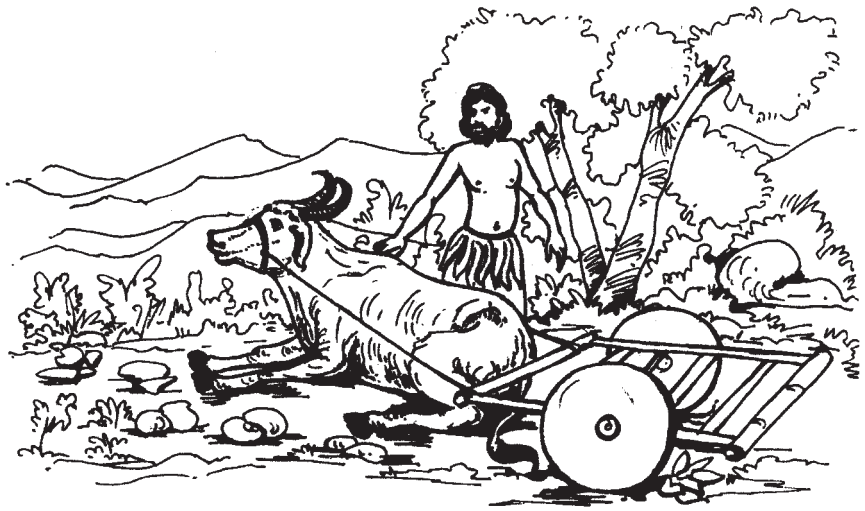

गोले पत्थर के पहियों के,
बीच उसे बैठाया।
भाग न जाये कहीं और वह,
इसका जतन कराया।

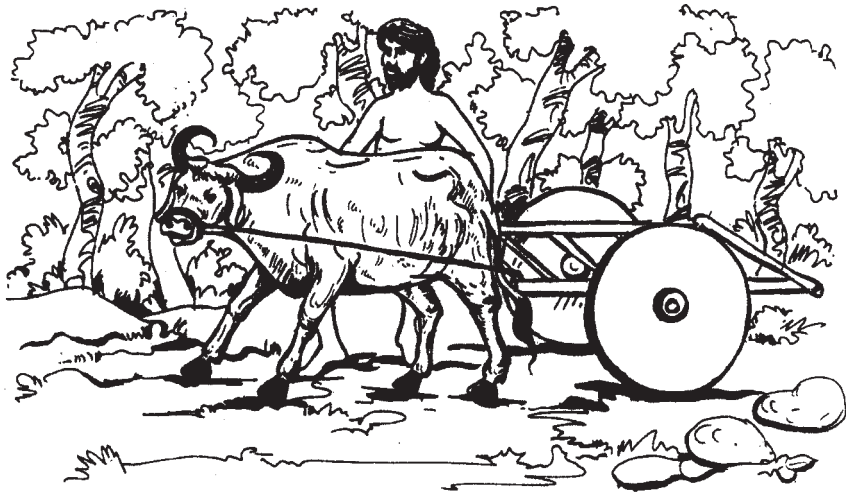

सुस्ताता वह रहा रात भर,
जब हो गया सबेरा।
साथ-साथ ठेला घसीटता,
लगा लगाने फेरा।

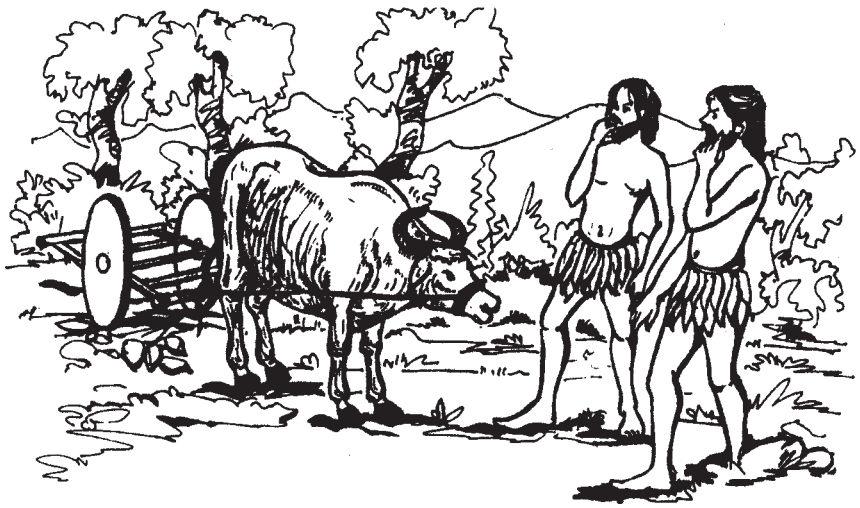

इसे देख कर सब लोगों को,
हुआ अचंभा भारी,
भैंसा ठेला खींच रहा था,
अच्छी मिली सवारी।

बरस हज़ारों बीत चुके हैं,
पर भैंसा बेचारा,
अब भी ठेला ढोता जाता,
नहीं कहीं है चारा।

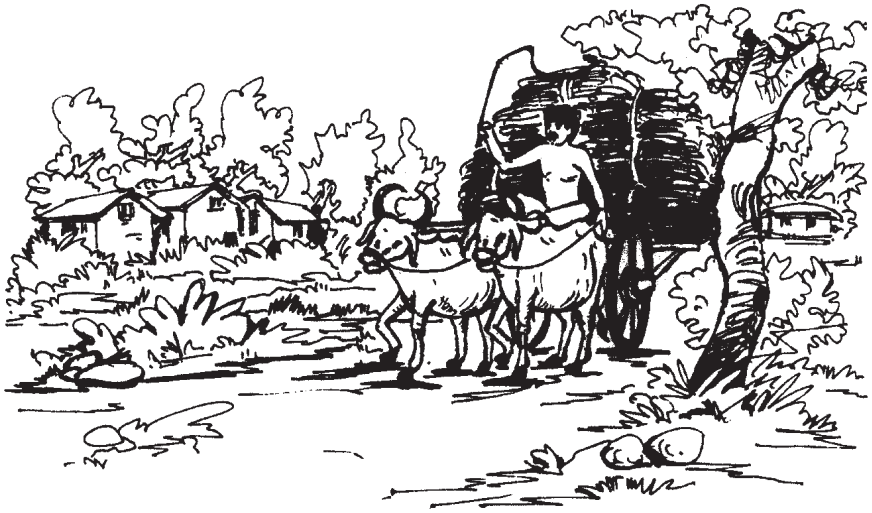

लकड़ी के पहिए अब बनते,
होते हलके–फुलके,
वही बैल या भैंसा–गाड़ी,
चरमर करती ढुलकें।

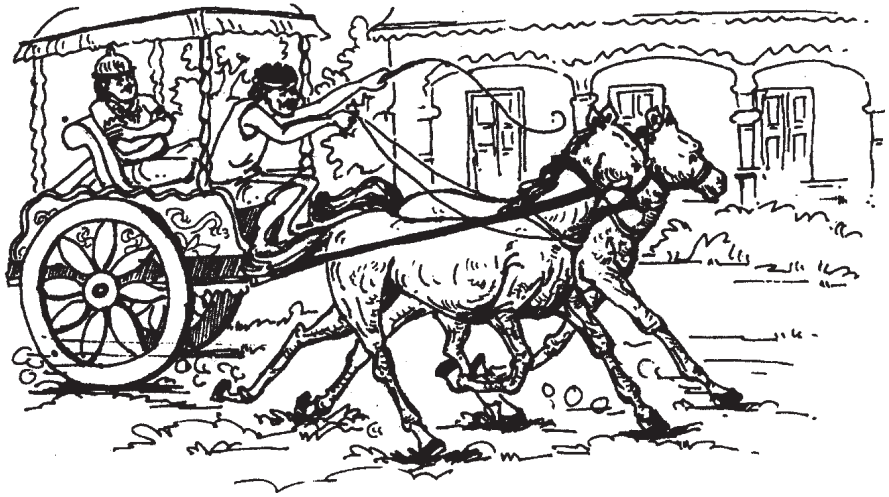

तब फिर रथ की बारी आई,
जिस पर राजे चढ़ते,
घोड़े उसमें जोते जाते,
फटफट सरपट चलते।

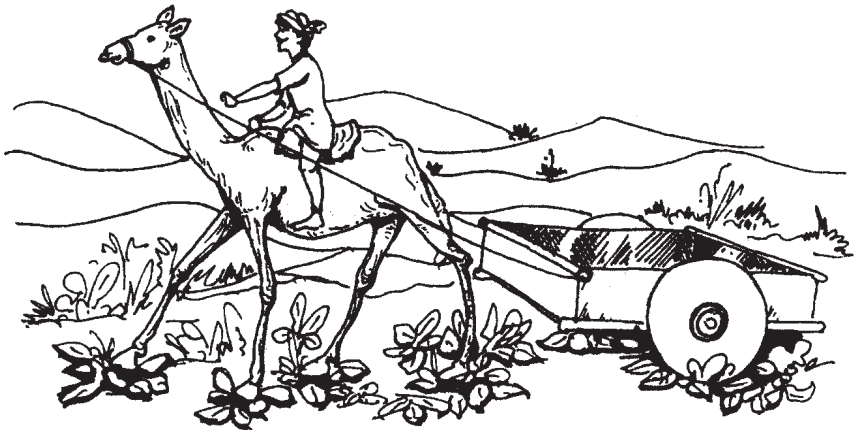

ऊंट कहीं पर खींचे देखो,
ऊंची–ऊंची गाड़ी,
कहते इन्हें ऊंट–गाड़ी हैं,
चलें कुचलती झाड़ी।

बर्फीली जगहों पर
बारहसिंहे जोते जाते,
झबरे–झबरे मोटे कुत्ते,
इसी काम हैं आते।

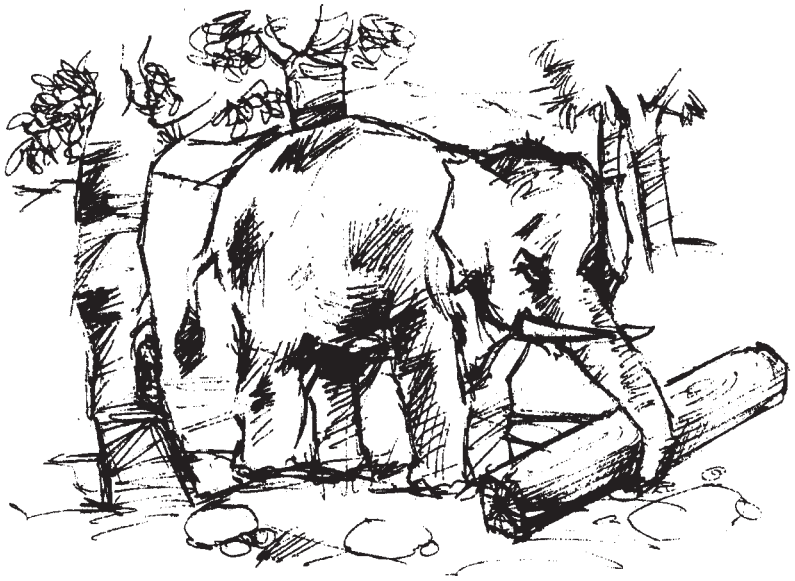

छोटी गाड़ी शुतुरमुर्ग है,
कहीं खींचता जाता।
हाथी भारी बोझ खींचता,
दिखलाई दे जाता।

शहरों में दिखलाई देते
इक्के, टमटम, तांगे,
इधर-उधर पहुंचाते हमको
ले पैसे मुंह मांगे।

लगा रबड़ का पहिया देखो!
चले साइकिल मेरी,
फरफर–फरफर चलती जाती
कहीं न लगती देरी।

इस पहिये के ही करतब से,
रेलें दौड़ लगातीं,
घड़घड़ करतीं पटरी ऊपर
दूर देश ले जातीं।

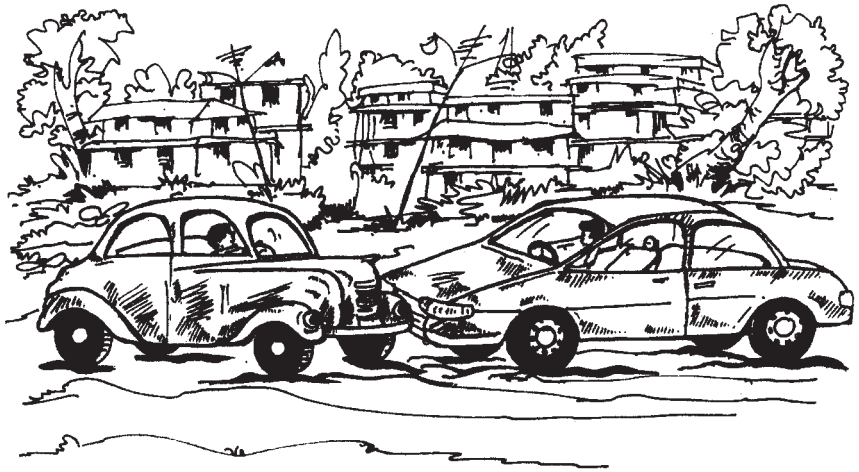

मोटर की क्या हालत होती,
अगर न पहिये होते,
फर्राटे से कैसे चलती?
समय बहुत हम खोते।

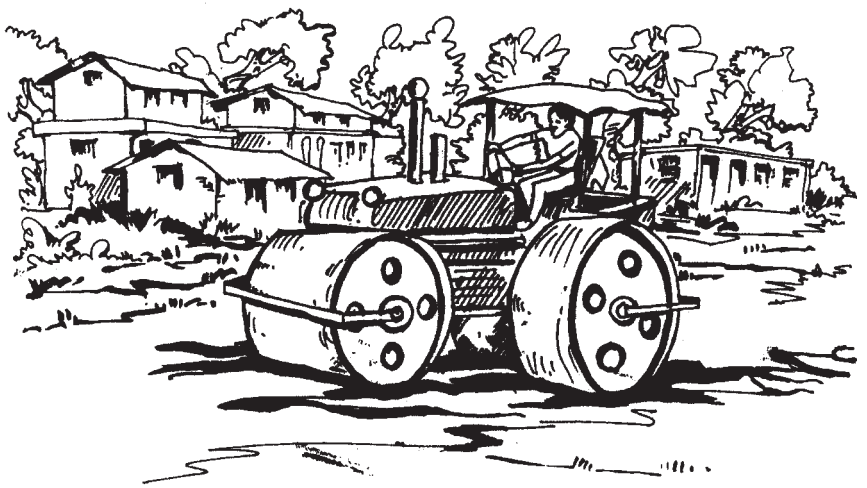

लोहे के पहिये के बल पर
'बैलट' शोर मचाता,
ऊबड़-खाबड़ सड़कों को वह,
समतल करता जाता।

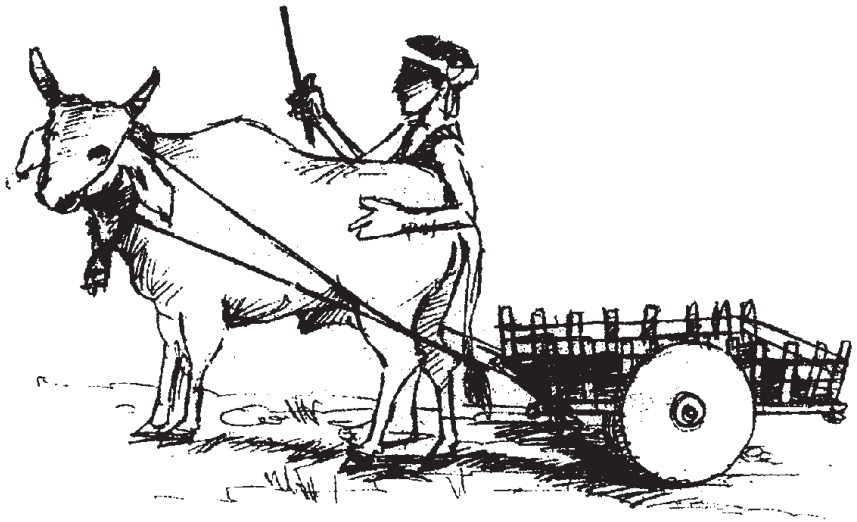

पर गांवों में काम चलाती
है बहली बेचारी,
छोटे–मोटे बैल खींचते
गाड़ी हल्की–भारी।

अगर नहीं भैंसा बेचारा,
उस दिन पकड़ा जाता
और नहीं पत्थर के पहियों
को, यों ही घिसलाता।

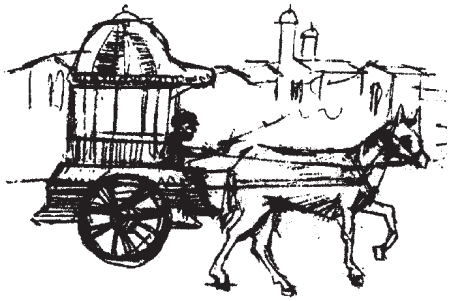

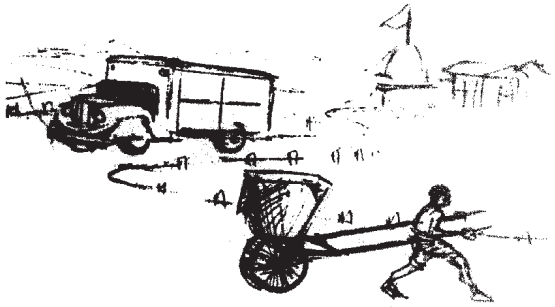

तो क्या कभी दिखाई देते,
इक्के मोटर तांगे,
इधर उधर हम को पहुंचाते,
ले पैसे मुंह मांगे।